दि.गं.10

M.A. I - Sem II

History CC-5

History of Women Study

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशा पर प्रकाश डालें।

हिन्दुस्तान में पारिवारिक प्रथा प्रायः इतिहास के प्रारंभ से ही संगठित सामाजिक जीवन का मुख्य तत्व रह चुका है। समाज पितृसत्तात्मक था। हिन्दू और मुसलमान दोनों में ज्येष्ठ पुत्र की प्राधान्य था।

हिंदू समाज में स्त्रियों को गृहस्वामिनी माना जाता है, क्योंकि कोई भी धार्मिक और सामाजिक कार्य स्त्री के बगैर पूरा नहीं हो सकता है। लेकिन अपने जीवन के प्रत्येक चरण में उन्हें पुरुष पर निर्भर रहना पड़ता है। मध्यकाल में पुत्री के जन्म को हर्ष का अवसर नहीं माना जाता था। समाज में सती और जौहर की प्रथा प्रारंभ हो गई थी। मुसलमानों ने भी इस प्रथा पर सहमति दी थी। मुसलमान स्त्रियों के संबंध में प्राचीन फारसी परम्पराओं का ही पालन करते थे, इसलिए उन्हें निम्न कोटि में रखते थे।

मध्यकाल में पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ। लेकिन यह उच्चवर्गों तक सीमित था।

उच्च वर्गों में पर्दा का मापदंड यह था कि जो परिवार जितनी ऊँची स्थिति में होगा, उतनी ही ऊँची खिड़कियाँ रहेंगी और स्त्रियाँ उतनी ही अलग रहेंगी।

हिंदुओं में विवाह एक धार्मिक कृत्य था। विवाह की आठ पद्धतियाँ प्रचलित थीं। स्वयंवर की प्रथा मध्यकाल के प्रारंभ होने के साथ समाप्त हो गए।

हिंदुओं और मुसलमानों में दहेज भी प्रथा प्रचलित हो गई थी। डोला भेजने की प्रथा भी सल्तनत युग से आरंभ हो गई थी। अधिकांशतः राजनैतिक संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए ही निर्बल व्यक्ति अपने से अधिक शक्तिशाली के हरम में डोला भेजकर राजनीतिक यातना से मुक्ति प्राप्त करता था।

स्त्री को जन्म से ही असहाय और अबला होने का बोध कराया जाता था। पर्दा प्रथा ने उनके बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास को भी हानि पहुँचायी। संगीत और नृत्य के प्रति पुरुषों के बढ़ते हुए आकर्षण ने समाज में नर्तकियों का वर्ग उत्पन्न कर दिया, जो कालान्तर में पातरों के नाम से प्रचलित हुआ। इस प्रकार नारी के सामाजिक सम्मान में भी गिरावट आई।

मध्यकालीन शिक्षा

वैदिक युग में महिलाओं द्वारा अर्जित की गई शिक्षा का विषय प्रायः साहित्य, धर्म, दर्शन, गणित, औषधि, कला संस्कृति और ज्योतिषी हुआ करती थी महिलाएं संस्कृत और प्राकृत भाषा में दक्ष होती थी।

मध्यकाल में मुस्लिम आक्रमण के कारण समाज में पर्दा प्रथा, बाल-विवाह सती प्रथा तथा जौहर प्रथा के प्रचलन ने शिक्षा में रुकावट डाली। हिंदू परिवार में यह अफवाह फैला दी गई कि लड़कियाँ अगर शिक्षा ग्रहण करेंगी तो जल्द ही वे विधवा हो जाएंगी। इस प्रकार मध्यकाल महिलाओं के शिक्षा के लिए अंधकार युग की तरह था।

- लेकिन दक्षिण भारत तथा बंगाल में कई विदुषियां शिक्षा का अलख जगा रही थीं। दक्षिण भारत में रात्रा, रीटा, माधवी, अतुलक्ष्मी, शशीप्रभा इत्यादि। बंगाल में चन्द्रावती, प्रियम्वदा तथा आनन्दमयी। महिलाएं साहित्य और दर्शन के वाद-विवाद में भाग लेती थीं। वे धर्म मीमांसा, वेदांत और संस्कृत साहित्य में विशेष रुचि रखती थीं।

Scanned with CamScanner

लेकिन मुसलमानों के आने के बाद हिंदुओं की शिक्षा पर राजकीय संरक्षण प्रायः समाप्त हो गया। संरक्षण सिर्फ कुलीन वर्ग, विद्वानों और ग्राम समुदायों तक सीमित रहा।

मुस्लिम महिलाओं में भी पर्दा प्रथा के कारण शिक्षा में गिरावट आई। लेकिन उच्च वर्ग की महिलाओं की शिक्षा के लिए महलों के अंदर ही "जनाना स्कूल" होते थे। प्रशासनीय कार्यों में दक्षता लाने के लिए उच्च वर्ग की महिलाओं को घुड़सवारी, तलवारबाजी तथा अस्त्र-प्रक्षेपण की शिक्षाएं दी जाती थीं।

बाबर की पुत्री गुलबदन बेगम ने फारसी में 'हुमायूंनामा' लिखा। हुमायूँ की भतीजी सलीमा सुल्ताना, अकबर की माता हमीदा बानू बेगम तथा माहम अनगा भी विदुषी थीं।

शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्देशित हुआ करते थे। शासक वर्ग, बड़े-बड़े जमींदार वर्ग तथा कुलीन वर्ग शिक्षा में अभिरुचि रखते थे। उनके अनुदान से कई शिक्षण और प्रशिक्षण संस्थाएं खोली गईं। इन्हें प्राथमिक शिक्षा मकतब और उच्च शिक्षा मदरसा के माध्यम से दिए जाते थे। व्यावसायिक, तकनीकी और पेशों से

Scanned with CamScanner

संबंधित शिक्षा दी जाती थी। विद्यार्थियों के अनुशासन पालन पर विशेष बल दिया जाता था।

मुगलकाल की विदुषियों में नूरजहाँ, मुमताजमहल, सती-उन-निसा, औरंगजेब की पुत्री जेबुन्निसा, जीनत-उन-निसा विदुषियाँ थीं। ये फारसी और अरबी भाषा के अलावा गणित, खगोल-विज्ञान की भी अच्छी ज्ञाता थीं।

इस प्रकार सर्वसाधारण महिलाओं के लिए मध्यकालीन भारत अंधकार युग की तरह था। इस स्थिति के निवारण के लिए न तो सरकार और न ही समाज की ओर से कोई कदम उठाए गए।

— o o —

Nikhil
DSPM.U.